

शानिदशाष्टा १० त्तिह्रितश्चशक्रे १४॥ **६॥** भोमेष्टा शिरसापले कस्तहित ६३१॥ जे वाङ्मना
गन्धवसप्राग्निप्रयुता १०२१३७ गुरोराशिदिशानन्दान्वितो १०११६ वैकुण्ठे ॥ शक्रेभोम
शराद्रयोगगणायुक् ७५०१३७ सौरिखवे दापले लोकाब्धि ४०१४३ रवनेव द्यो जयुता
रोहो २६०२४ गतेवतस्मरे ॥ ६॥ अथराजादिगणितमाह ॥ **॥** शकाव्यगणितो रामे ३ म
मिश्रो मुनीना ७ हत ॥ रव्यादि क्रमेण राजामेवितस्य वतुधर्क ॥ १०॥ शकोरशानि ३६
संयुक्तो वसुभिर्भागमाहरेत ॥ अनन्तादि क्रमेणो वचाष्टो नागाप्रकीर्तित ॥ ११॥ अनन्तो वा
सुकिपक्षो माह पञ्चशतक्षक ॥ कलीः कर्कठ शंखश्चाष्टो नागाप्रकीर्तित इमे भु
वा ॥ १२॥ शकशशा १ संयुक्तो मुनी ७ भो भागहारित ॥ आवाहदि क्रमेणो वसप्रावा
ताप्रकीर्तित ॥ १३॥ आवाह प्रवहश्चैव सभेवो वहावे भस्तथा ॥ उह होनि वहावायु सप्तवा
ताप्रकीर्तित ॥ १४॥ शकसराग्नि ३५ संयुक्तो वेदेनेव ४ वशीषित ॥ आवर्तो वृद्धो सर्व

॥३॥

॥भा॥

उष्णोदो गार्श भव ॥१५॥ आर्वे निजलो मेघः संवर्त वायु रुद्र म ॥ पुष्को दुष्करावृष्टि
दो गार्श सवर्ति मरु ॥१६॥ युग्मा जगो मिन गते रा शा के ३१॥ २१२ रवीर्विदा कर्कट कं पया
ति ॥ जले मता ट १०० हरिकाम के ५६ रुद्र ५० मुक्त हिक न्या मृगयो द १०० रमिति ८० ॥१७॥
कलार कं भालि तुला ४१११। ८। ७ गते न्द्रो वृजे द्रवि षम वति ६६ सदा निम ॥ ॥ जला ठ के
विषु थान द्दरा व सवे द १०। ६। ४ गुणे पते ॥ विशति २० भाग होरो समुन्दे गिणि भूमिषु ॥१८॥
द शोया जन विस्ति र्णा शत योजन मायु र्त म ॥ आठ कं त्र विजा निपाये न स्र वर्ष ति वा सव ॥
१६॥ गुणे न ३ गुणितं शा कं सप्त ७ भि भाग मा होत् ॥ शेष यमा २ रुतं कत्वा पंच ५ तत्र णियो
जप्रत ॥२०॥ यथा शाक तथालब्धं यः शेष पर्व शेष वत् ॥ मेघो धान्य तृणा चैव शित रोद्र
मरगा ॥२१॥ प्रजानं चत थाष्टि क्षम श्व नृ पविग्रह ॥ सन्ते न वस माख्या ता पुर्व शाका वः ॥ ३ ॥
तामुद्र ॥२२॥ शाको वैदे श्व ४ गुणितैः पर्वतैः ७ भाग मा होत् ॥ द्वि २ द्यो रूपेण १ संयोज्य ॥ श्व ॥